मुखपृष्ठ
साहित्यकारों की वेबपत्रिका
साहित्यसुधा
वर्ष: 5, अंक 92,सितम्बर(प्रथम), 2020

अहसास की करवट

सीमा जैन 'भारत'

"रूबी कहां है तू?"वेणी ने अपना दर्द छुपाते हुए कहा।

"ऑफिस में। पर तेरी आवाज़ को क्या हुआ है? इतनी थकी हुई क्यों लग रही है?" रूबी वेणी की आवाज़ सुनकर घबरा गई।

"मैं हॉस्पिटल में हूं।" वेणी ने कहा। वह इतनी जल्दी उसकी आवाज को समझ जायेगी। ये उसे पता था।

"क्यों, क्या हो गया तुझे?" उसने डरते हुए पूछा।

"अरे, फ्रैक्चर हो गया है।"

"कौनसे हॉस्पिटल में है तू? वेणी के पास जाकर ही देखना है कि क्या हुआ है।

"मेट्रो, घर के पास वही है।"

"चल तू फोन रख, मैं हॉस्पिटल आ रही हूं। अपने बैंक में असिस्टेंट को जरूरी बातें समझा कर रूबी भागती हुई सी अपनी गाड़ी के पास पहुंची। रास्ते में ट्रैफिक कम ही था। यदि ये सब शाम के समय होता तो उसे वेणी के पास पहुंचने में दो घंटे लग जाते।

रूबी और वेणी बचपन की सहेलियां। धर्मशाला के स्कूल में साथ में थीं। उसके बाद रूबी के पिता का ट्रान्सफर हो गया और वो दोनों बिछड़ गईं। तब तो सिर्फ उदासी

के साथ ही वो जुदा हुईं थी कभी सोचा भी नहीं की रूबी के पापा की पोस्टिंग एक बार फिर धर्मशाला में होगी।

इस बार जो दोनों मिली तो टेलीफोन का युग शुरू हो चुका था। उसके बाद तो वो दोनों कभी दिल से जुदा न हो पाई।

उनके साथी, उनके गहरे दोस्त कभी नहीं बन पाए। दोनों के जॉब और शादी नोएडा में होने की खुशी तो उनके लिए अपने जीवसाथी के मिलने से भी ज्यादा ही थी।

दोनों में उत्तर या दक्षिण जितना ही फ़र्क है। एक मोम जैसी मुलायम, मधुर वाणी और नाम भी वैसा ही, वेणी। दूसरी एकदम सख्त, सेना के किसी ऑफिसर के जैसी रोबदार रूबी। शर्ट की प्रेस हो या गाड़ी पर धूल कोई भी गलती बर्दाश्त नहीं। हर काम परफेक्ट होना चाहिए।

अपने-अपने ऑफिस में दोनों के रिश्ते और व्यहवार भी उनके स्वभाव जैसा ही हैं। वेणी को सब बेहिचक अपनी बात बता देते हैं। गलती होने पर भी छुपाते नहीं और रूबी के सामने तो सच बोलना भी मुश्किल हो जाता है। सब उसका सम्मान तो करते हैं पर दूरी बना कर ही रखते हैं।

इन दोनों के स्वभाव से इनकी दोस्ती अछूती ही रही। इनका प्रेम, अपनापन हर दिन बढ़ता ही गया। दो विपरीत ध्रुवों का आकर्षण कभी कम नहीं हो सका।

आधे घंटे में रूबी वेणी के पास थी। एक पलंग पर वेणी जिसके पैर पर कच्चा प्लास्टर लगा हुआ था। एक हाथ पर पट्टी बंधी थी। जिसे देखकर रूबी की आंख में आंसू आ गए।

"कैसे हुआ?" वेणी को छूते हुए उसने कहा।

"पागल, डर मत! कुछ नहीं फिमर बोन का फ्रैक्चर हो गया है। हाथ में भी शायद..."

"तू कहां थी?"

"छत पर। माली काका के साथ गमले शिफ्ट करवा रही थी। तो एकदम से पैर फिसल गया।"

"तुझे क्या जरूरत थी, उनकी सहायता करने की?"

"अब वो बूढ़े हैं एक बड़ा गमला..."

"सारी मानवता का जिम्मा तेरा ही है क्या?" बीच में उसकी बात को रोकते हुए रूबी बोली।

"डॉक्टर क्या बोल रहे हैं?"

"पैर की सुजन कम होने पर ही पक्का प्लास्टर या रॉड डलेगी।"

"रॉड, तूने विकास को फोन कर दिया? और घर पर?"

"बाबूजी की अभी बायपास सर्जरी हुई है उनको बताना ठीक नहीं और विकास..."

"हे भगवान, इतनी बड़ी बात हो गई और विकास तेरे पास नहीं है। उसका ऑफिस तो यहां से बहुत पास है। वो इस समय यहां क्यों नहीं है?"

"मैंने उसको फोन किया था। पर वो एक जरूरी..."

"ये तो ठीक नहीं है। विकास को अभी तेरे साथ होना था।" कहते हुए रूबी अपना फोन लेकर बाहर चली गई। उसे बहुत गुस्सा आया की ये वेणी की उदारता का नतीजा है कि इतने मुश्किल समय में विकास उसके पास नहीं है। उसने विकास के ऑफिस में फोन लगाया। फोन अनरिचेबल आ रहा था। उसने रिसेप्शन पर फोन लगाया तो रिसेप्शनिस्ट ने कहा- "सर एक मीटिंग में हैं।"

" अरे वेणी का फ्रैक्चर हो गया है। वह हॉस्पिटल में एडमिट है क्या विकास की मीटिंग रोकी नहीं जा सकती है?"

"मैडम, वेणी मेम का फोन थोड़ी देर पहले आया था। फॉरेन डेलीगेट्स के साथ मीटिंग होने के कारण सर का फोन बन्द था। मैंने जब मैडम को बताया तो वह बोली ' अभी रहने दो। विकास को अपना काम कर लेने दो। जब मीटिंग ख़तम हो तब ही बता देना। मैंने कारण पूछा तो सुनकर मैं भी घबरा गई थी। पर मैडम बोली रूबी को बुला लेती हूं। वह सब सम्हाल लेगी।"

"मैं ऑफिस से किसी को आपके पास भेज दूं? उसके लिए भी उन्होंने मना कर दिया था।" रिसेप्शनिस्ट बोली।

"चलो कोई बात नहीं।"

"अब शायद मीटिंग ख़तम होने वाली ही हो मैडम।"

"ठीक है।" से ज्यादा रूबी कुछ भी ना कह पाई। आज पहली बार उसे अपने और वेणी के व्यवहार में और सोच में फर्क नजर आया। आज तक उसे हमेशा वेणी बहुत उदार लगती थी। हमेशा झुकने वाली और रिश्तों को डरकर निभाने वाले ही लगती थी। आज पहली बार उससे लगा कि रोली कितनी समझदार और शांत है।

वैसे तो वह कभी माली के साथ काम करती ही नहीं। गमले उठाने का तो सवाल ही नहीं उठता है। मिट्टी में अपने हाथ मैं कभी गंदे नहीं करती न माली के पास खड़े रह सकती है... जिसके कारण पैर टूटा उसके तो मैं प्राण ही ले लेती। और कबीर, यदि वो अभी मेरे पास नहीं होता तो उसे तो काले पानी की सजा ही दे दी होती। जब मेरे पैर में मोच आई थी तो कबीर ने दो दिन ऑफिस की छुट्टी ली थी। तीसरे दिन मॉम के आने के बाद ही उसे मुक्ति मिली थी।

एक ये है, सरलता की मूर्ति। माली के साथ कैसे हॉस्पिटल आई। किसी को परेशान नहीं किया। न घर में मां को बताया, अपने से ज्यादा अपने बाबूजी का ख्याल करने वाली वेणी आज रूबी को बहुत बड़ी लगने लगी। अपने आप को पहली बार रूबी ने बहुत छोटा महसूस किया। विकास पास में नहीं है फिर भी कितनी शांति...

अभी भी सिर्फ मेरे साथ ही संतुष्ट है। कोई इतना सरल कैसे हो सकता है? उसके पास माली अभी भी बैठे हैं यह तो मैंने देखकर भी नहीं देखा।

रूबी के पैर कमरे की ओर बढ़े। इतने में दरवाज़ा खुला और माली बाहर निकले। रूबी को देखते हुए बोले - " वेणी बिटिया आपको बुला रही है।"

"दो मिनिट में आती हूं काका!" कहकर रूबी ने कबीर को फोन लगाया। उसे वेणी के बारे में सब बताया तो कबीर बोला -"तुम परेशान मत हो। मैं जल्दी ही तुम्हारे पास आता हूं। एक सेकेंड ओपिनियन भी भाईसाहब से ले लेंगे।"

"तुम दोनों का खाना?"

"वो तो सोचा ही नहीं। ऐसा करो तुम खाना लेते हुए ही आना। मैं भी अपना टिफिन बैंक में ही भूल आई।"

"अभी बारह बजे हैं मैं एक डेढ़ घंटे में आपकी सेवा में हाजिर होता हूं मैडम।" कहकर कबीर ने बात ख़तम की।

"जल्दी आ जाना।" कहते हुए रूबी मुस्कुरा उठी।

कमरे में जब वह वेणी के पास गई तो वह घबराई हुई थी। उसने रूबी से पूछा - "विकास से बात हुई?"

" नहीं मैंने कबीर को फोन करके बुला लिया है। वह आ रहा है।"

"रूबी, एक काम कर दे?"

"क्या?"

"काका को अब घर जाने दे। ये भी सुबह से मेरे पास बैठे हैं भूखे- प्यासे।"

"अरे बिटिया, हमारे कारण तुमको बहुत बड़ी तकलीफ़ हो गई..." कहते हुए उनकी आवाज भीग गई। वह अपनेआप को इस दर्द का गुनहगार समझ बैठे थे।

वेणी ने कुछ कहने के लिए मुंह खोला ही था कि रूबी उससे पहले बोल उठी " नहीं काका, जो होना था हो गया इसमें आपकी कोई गलती नहीं है। आप ख़ुद को परेशान मत करो।" रूबी के इन शब्दों से काका को तो राहत मिली होगी पर वेणी की आंखें तो आश्चर्य से फैल गईं थीं। वेणी ने रूबी से कहा - "तू काका को बाहर तक छोड़ कर आ जा। इनकी सायकिल हमारे घर के बाहर रखी है। इनको घर का रास्ता भी समझा दे।"

"अब रास्ता क्या समझाना, मैं इनको ऑटो में बिठा देती हूं। इतने ट्रैफिक में रास्ता नहीं समझ पायेंगे।" कहकर रूबी तो काका के साथ बाहर चली गई पर वेणी अपना दर्द भूलकर रूबी के बारे में सोच रही थी।

बचपन में मिली थी तब या उसके बाद रूबी कभी भी नहीं बदली। ' जिद्दी, गुस्से वाली रूबी, उसे किसी की बात सुनने समझने की कभी जरूरत ही नहीं होती थी। जो उसने कहा वही वेदवाक्य... आज खाना समय से क्यों नहीं बन पाया, ड्राइवर लेट क्यों हुआ, यूनिफॉर्म टाइम से प्रेस क्यों नहीं हुआ? ऑफिस में किसी से कोई गलती क्यों हो गई? इस सबके लिए उसके पास कभी समय, समझ नहीं रही। उसकी मां को अपराधी बने मैंने कई बार देखा था। वे हमेशा कहती थी 'कैसे इसका मन बदलेगा? किसी दूसरे की बात तो ये कभी सुनती ही नहीं है। मेरे साथ तो ठीक है पर शादी के बाद?'

' चिंता मत करो आंटी, ये मन की अच्छी है अपनेआप बदलाव आ जायेंगे।' यह सांत्वना तो वेणी ने रूबी की मां को दी थी। पर वो कल कब आयेगा ये तो वह भी नहीं जानती थी। आज उसे पहली बार माली के साथ जाती रूबी को देखकर लगा... कुछ बदलाव तो ...

माली काका को ऑटो में बिठाकर रूबी ने कैंटीन से कॉफी और कुछ खाने का सामान लिया।

वेणी के कमरे से किसी को बाहर निकलता देख उसके कदम तेजी से दरवाज़े की ओर बढ़े। अंदर देखा विकास वेणी के सर पर हाथ रखे दूसरे हाथ से उसका हाथ थामे है और वेणी फूट - फूट कर रो रही है। उसने झट से दरवाजा बंद कर दिया। पीछे से विकास की आवाज... 'रूबी '...आई थी। पर उसे नजरअंदाज करके वह आगे बढ़ गई।

बाहर लॉबी में लगी कुर्सी पर बैठ कर वह सोचने लगी मेरे सामने मज़बूत दिखने वाली वेणी इतनी कमज़ोर कैसे हो सकती है?

इंसान अपना दुःख उसके सामने ही कह पाता है जो बड़ा हो, जो उसे सम्हाल ले। मन ने उसे जवाब दिया।

मतलब वो इतनी समझदार नहीं है कि वेणी उसके सामने रो सके?

कैसे रोती? वो तो मेरे गुस्से को ही सम्हालती आ रही है, आज नहीं सालों से।

आज रूबी अपनेआप से ही बातें कर रही थी। कबीर उसके पास आकर बैठ गया उसे पता ही नहीं चला।

रूबी, सॉरी यार लेट हो गया। इस समय रेस्टोरेंट में लंच ... '

'कोई बात नहीं कबीर...'

' तुम बाहर क्यों बैठी हो?'

' विकास अब आ पाया है। वो दोनों साथ में हैं।'

' तुम उदास क्यों लग रही हो? परेशान मत हो हम तीनों मिलकर सब सम्हाल लेंगे।'

' हां, मुझे पता है तुम हमारी दोस्ती को समझते हो।' कहकर रूबी ने कबीर के हाथ पर अपना हाथ रख दिया। कबीर ने भी उसके हाथ को पकड़ लिया।

' वेणी विकास के आने पर बहुत ज़ोर से रो रही थी...'

' उसे बहुत तकलीफ़ हो रही होगी। मल्टीपल फ्रैक्चर हुआ है। उसे पेन किलर के बाद भी बहुत दर्द हो रहा होगा। अभी डॉक्टर से बात करने के बाद भैया से भी एडवाइस ले लेंगे। सब ठीक हो जाएगा।'

' हां, ठीक तो जरूर होगा। पर ये अफसोस कभी कम नहीं होगा कि मैंने वेणी से उसके दर्द की, आने वाली परेशानी से जुड़ी कोई बात नहीं की। न ही उसने कुछ कहा। मुझे तो इस बात का गुस्सा था कि विकास उसके पास क्यों नहीं है। वो मुझ बेवकूफ से कहती भी तो क्या?'

' इंसान अपना मन उसी के सामने खोलता है जहां उसे कोई सुनने वाला हो।'

' मेरे सामने तो कभी कोई भी मुंह नहीं खोल पाया।'

' छोड़ो, ऐसे नहीं बोलते परेशान मत हो। वह जानती थी कि तुम उसे सम्हाल लोगी। तभी तो उसने तुमको बुलाया। बस, थोड़ी सी गर्म...” कहकर कबीर ने रूबी को खुश करना चाहा।

' मेरे सामने तो मेरी मां हो या तुम, मेरा ड्राइवर हो या क्लर्क कोई भी बोल ही नहीं सकता तो दिल की बात... कोई क्या करता?'

' हां रूबी, किसी की गलती का कारण तो जरूर सुनना चाहिए। हर बार कोई बहाना बनाए यह जरूरी नहीं... कल तुम्हारे बैंक में रवि बहुत परेशान था। तुम्हें उसकी बात सुननी थी। उसके पिताजी का एक्सिडेंट हो गया था। वो इसीलिए ...'

' यह बात तुमको कैसे मालूम है?'

' अभी जो असिस्टेंट मैनेजर आया है वो मेरा बचपन का दोस्त है। उसने ही रवि की अस्पताल जाकर सहायता भी की थी।'

' अपने दिल में किसी की बात की, उसकी गलती सुनने की जगह होनी चाहिए। ये बात हमेशा मां ने समझानी चाही पर मैंने कभी भी नहीं सुनी। कपड़े प्रेस होकर नहीं आए तो स्कूल नहीं जाना है। बिना प्रेस के कपड़े या खुद कपड़े प्रेस करने की जगह तो मैंने कभी बनाई ही नहीं थी। रवि लेट हुआ यही काफी था उसे अपमानित करने के लिए, उसकी मजबूरी के लिए मेरे पास कोई जगह थी ही नहीं। आज वेणी के आंसू मुझे बहुत कुछ सिखा गए।'

“वेणी के इस दर्द ने तुम्हें एक दवा ही दी...”

“हां, आज यह सब नहीं होता तो क्या मैं कभी किसी की बात समझ पाती?”

“कोई बात नहीं, फिर मैं देरी से आने की सजा पाता। तुम्हारा हाथ थामे हुए नहीं बैठ सकता था मल्लिका... दूर खड़ा होता और तुम्हारी डांट...”

“चुप!” रूबी ने शर्माते हुए कहा।

विकास सामने से आ रहा था। उसे देखकर वो दोनों आगे बढ़े... वेणी के पास जाकर उसे लगा...आज पहली बार उसे लगा उसके मन के अहसास अब करवट बदल चुके थे।

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें